

## प्राण - એક સંક્ષિપ્ત અધ્યયન

હિના વી. મોરી

રિસર્ચ સ્કોલર  
લકુલીશ યોગ યુનિવર્સિટી, અમદાવાદ.

### પ્રસ્તાવના

‘પ્રાણ’ એક સંસ્કૃત શબ્દ છે. જેનો ઉપયોગ વેદ, પુરાણો, ઉપનિષદો, દર્શનો ઇત્યાદિ ભારતીય શાસ્ત્રોમાં થયેલો છે. સંસ્કૃતમાં વાયુ ને પ્રાણ કહેવાય છે. તેમાં પ્ર ઉપસર્ગ છે. અને અન ધાતુ છે. અન નો અર્થ ‘જીવન શક્તિ’ વાયક અથવા ‘ચેતના’ વાયક થાય છે. એ દ્રષ્ટિએ ‘પ્રાણ’ શબ્દનો અર્થ ‘ચેતન શક્તિ’ થાય છે. આ સૃષ્ટિમાં અચેતન જડ પદાર્થો સિવાય જે જીવ ધારણ કરે છે તેમના માટે ‘પ્રાણી’ શબ્દ પ્રયોજવામાં આવ્યો છે. એ દૃષ્ટિએ ‘પ્રાણ’ નો અર્થ ‘જીવન કલા’ પણ કહી શકાય.

‘શ્વસન ક્રિયાનો વાયુ વિશેષ’ ‘સુક્ષ્મ શક્તિ સ્રોત’ વગેરે અનેક પર્યાયવાચી અર્થો પણ કરવામાં આવે છે.

(રાજર્ષિ 2014)

પ્રાણ શક્તિ નિરંતર ગતિમાન છે. પ્રાણ તમામ ચેતના પ્રાણીઓમાં તેમની દરેક સ્વૈચ્છિક અને અનૈચ્છિક ક્રિયા, દરેક વિચાર મન અને શરીરના દરેક સ્તરે ઊર્જાના સ્વરૂપમાં હાજર છે. વૈજ્ઞાનિક સંશોધન પ્રાણને બહુ પરીમાણીય જટિલ ઊર્જા તરીકે વર્ણવે છે. જે વિદ્યુત-ચુંબકીય, ઇલેક્ટ્રોમેગ્નેટિક, ઓપ્ટિકલ, વિઝ્યુઅલ થર્મલ અને માનસિક ઊર્જાનું સંયોજન છે. પ્રાણ અચેતન વિશ્વમાં પણ હાજર છે. આ સ્તરે તે ચળવળ વૃદ્ધિ અને ક્ષયનું કારણ બને છે. વાસ્તવમાં પ્રાણ એ પ્રગટ જગતનો આધાર છે. આ શક્તિ મૂળ ચેતના બનાવવાની ‘આદિમ ઈચ્છા’ સ્વરૂપે પ્રગટ થઈ છે. તે છાંદોગ્ય ઉપનિષદમાં કહેવાયું છે.

सर्वाणि इ वा ईमानि भूतानि ।

प्राणमेवाभिसंविशांति प्राणभ्युज्जिङ्गते ॥

(1.11:5)

‘પ્રલય કાળમાં તમામ જંગમ અને સ્થાવર/ચેતન અને નિર્જીવ પ્રાણમાં ભળી જાય છે. અને સર્જન કાલમાં જન્મે છે.’

પ્રાણ જે રીતે દરેક જીવના આખા શરીરમાં વ્યાપી જાય છે તેને પ્રાણમય કોશ કહેવાય પ્રાણની સ્થિતિ અનુસાર આભા બદલાય છે. આ પ્રાણિક ક્ષેત્રને કેટલીવાર ‘સાયપ્લાઝમાં’ કહેવામાં આવે છે. કારણ કે તેની તુલના પ્લાઝમાં ભૌતિક શાસ્ત્રમાં વર્ણવેલા પ્લાઝમાં (ચાર્જડોસ) સાથે કરવામાં આવે છે. તેને ચાર્જ કરેલ વરાળ કણો તરીકે વર્ણવામાં આવે છે. જે આંતરિક રીતે મન દ્વારા અને બ્રાહ્મ રીતે ઇલેક્ટ્રિક, ચુંબકીય અથવા ઇલેક્ટ્રોમેગ્નેટિક ક્ષેત્રો દ્વારા પ્રભાવિત થાય છે. ‘પ્રાણિક શરીરમાં પ્રાણ ઊર્જા વહન કરતી ચેનલોમાંથી વહે છે. અને ઊર્જાના વમળ જેવાં ચક્રોમાં સંગઠિત થાય છે. કેટલાંક સંશોધનોના મતે પ્રાણની વિદ્યુત ચુંબકીય ઊર્જા કિરણોત્સર્ગ ઉત્પન્ન કરે છે. જેમાં વિદ્યુત અને ચુંબકીય ઊર્જા એકબીજાના કાટખૂણે હોય છે. જે પરિણામે સર્પાકાર દેખાય છે. હકીકતમાં તો ચક્રોની ફરતે સર્પાકાર અથવા વીંટળાયેલી રચનાના વિવધ વર્ણનો અને ચિત્રો વિશ્વના તમામ ભાગોમાંથી ઋષિઓ અને વિદ્વાનો દ્વારા કરવામાં આવ્યાં છે.’

## सार्वभौम प्राण

सृष्टिमांसी दरेक वस्तु प्राणना विशाण, सर्वव्यापि महासागरमां तरे छे. अने तेमांशी आवश्यक तत्वो भेये छे. कठोपनिषदमां लभायेल छे. (2:3:2) के,

यदिदिं किं च जगत्सर्वे प्राण एजति निःसृतम्

आ समग्र ब्रह्मांडमां जे कंठ छे ते प्राणमांशी जन्मे छे. अने स्पंदन करे छे.

आ कोस्मिक प्राण जेने महाप्राण पण कहेवाय छे. सर्जन समये अस्तित्वमां आव्युं हतुं. आम प्राणने संपूर्ण समजवा माटे व्यक्तिये सृष्टिना आरंभमां पाछा जवुं पडशे.

शरुआतमां कंठ नहोतुं सर्जन पण नहोतुं जे अस्तित्वमां छे तेमां सर्व-व्यापी, अव्यक्त चेतनामां सृष्टिनां तमाम जरूरी गुणो अने तत्वो समायेला छे. जेने शास्त्रो द्वारा परब्रह्म तरीके ओणभवामां आवे छे.

तांत्रिक अने वैदिक साहित्यमां कहेवायुं छे के परम तत्वनी अंदर ओक ईश्वर उत्पन्न थई ओ कोई 'ओकोडबहुस्याम' 'हुं ओक हुं हुं अनेक बनी शकु' आ ईश्वर सर्जनात्मक प्रेरणा छे जे 'मन' मां डेरवाय छे. अव्यक्त चेतनानी ईश्वर प्रथम स्पंदनने जन्म आपे छे. अने पछी ओर्जा छूटी जाय छे. आ प्रथम यणवण छे. अस्तित्वनी प्रथम क्षण, ज्वननुं प्रथम अभिव्यक्ति.

## प्राण अने चित

चले वाते चले चितं निश्चले निश्चले भवेत् ।

योगी स्थाणुत्वमाप्नोति ततो वायुं निरोधयेत् ॥

ज्यारे प्राण गतिमां होय छे त्यारे मन पण यंचण बने छे. ज्यारे प्राण स्थिर थाय छे त्यारे मन पण स्थिर थाय छे. आ (ज्वननी स्थिरता) द्वारा योगी स्थिरता प्राप्त करे छे. तेथी योगीओओ वायुने नियंत्रित करवो जोईओ.

हठयोग प्रदीपिका (2:2)

ज्वनना अस्तित्व माटे ज्वन अ चेतना बंने होवा जरूरी छे. समान लागाणी ओ मन छे. जे चेतनने अनुभवनी नजुक लई जाय छे. ते प्राण छे अने जे प्राण ने यलावे छे ते वासना छे. तेथी प्राण अने वासना ओ मनना बे पाया छे. सज्व प्राणी कहेवाय छे. ओटले के जेनी पासे ज्वन अने चेतना छे ओवुं नथी के चेतना अस्तित्वनुं कारण छे. अने ज्वन तेनुं परिणाम छे न तो ज्वन कारण छे के चेतना परिणाम नथी आ अस्तित्वनी बे बाजुओ छे. जे दरेक वस्तुनी प्रकृति नक्की करे छे. चेतना ओ जागृति छे ज्ञान छे. प्राण ओ यणवण द्वारा प्रगट थाय छे. चेतना ओ निष्क्रिय अनुभव छे. ज्यारे प्राण ओ प्रगट थयेल ओर्जनुं सक्रिय तत्व छे. आ बे अपरिवर्तनशील मूलभूत तत्वो छे. जे ब्राह्म अने सूक्ष्म ब्रह्मांडनो आधार छे. बधुं प्राण अने चितनुं संयोजन छे.

## वैयक्तिक प्राण

शिव स्वरोदयमां देवी शिव ने पूछे छे "आ जगतमां माणसनो सौथी मोटो मित्र कोण छे ? शिव जवाब आपे छे."

प्राण एवं परं मित्र, प्राण एव पर) सखा ।

प्राणतुल्यः परो बन्धुर्नास्ति नास्ति वरानेन ॥ (219)

प्राण श्रेष्ठ मित्र छे, प्राण श्रेष्ठ सभा छे, समुभी प्राण करता वधु नजुक आ दुनियामां कोई मित्र नथी.

तमाम ज्वो प्राण धरावे छे जे ज्वन अने अस्तित्व आपे छे. दरेक व्यक्तिमां प्राणनुं प्रमाण तेनां व्यक्तिकनी

शक्ति द्वारा सूचववामां आवे छे.

## भोराकमां प्राणुं महत्व

भगवद्गीता (17:8:-10) मां विविध भाद्य पदार्थोना महत्वपूर्ण बणना गुणोनु सात्विक, राजकीय अने तामसिक श्रेणीओमां वर्गीकरणो उल्लेख कर्यो छे. आधुनिक समयमां झन्सना आन्द्रे सिमोनेटोना द्वारा भोराकना महत्वना मूल्यांकननी पध्धति विकसाववामां आवी हती.

बधा ज बीजोनी प्राण शक्ति होय छे.

कारण के तेओ जिवननु संकेन्द्रित रूप छे. श्रीमद् भगवद् गीतामां भगवान श्री कृष्णे यक्ष्थी अवशिष्ट थयेलां अन्ननु महत्व वर्णव्युं छे.

यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः ।

भुज्यते ते त्वधं पापा ये प्रचन्त्यात्मकारणात् (3.13)

अर्थात: “जे श्रेष्ठ पुरुषो पक्षना बयेला भाजनने भाय छे. ते बधा पापोथी मुक्त थाय छे. परंतु जेओ इक्त पोताना माटे ज रांधे छे तेओ पाप ज भाय छे.”

भगवान श्री कृष्ण भगवद् गीतामां कहे छे.

अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः ॥

प्राणापानसमायुक्तः प्रचाम्यन्नं चतुर्विधम् ॥

(अ - 15 श्लोक 14)

## ब्रह्मांडव्यापी प्राणनी अनुभूति

प्रत्येक जिवनी अंदरनो व्यक्तिगत प्राण ये महाप्राणना ब्रह्मनो ऐक भाग छे. परंतु ज्यां सुधी आ सत्य स्वीकारवामां न आवे त्यां सुधी माणस पोताने बाकीना ब्रह्मांडथी अलग माने छे. प्राणायामनो अभ्यास व्यक्तिगत प्राणने सक्रिय करे छे. अने तेनी तीव्रतामां वधारो करे छे. तेओ आभा शरीरमां योक्सस मात्रामां सर्जनात्मक गुण उत्पन्न करे छे. ते पहेलांथी ज अस्तित्वमां रहेला प्राणने असर करे छे. जेना कारणे प्राण “आज्ञा यज्ञ” सुधी उपर उठे छे. अने पछी ते शरीरनां विविध भागोमां प्रसरे छे. आ प्रक्रिया “प्राणविधानो” आधार छे. प्राणमांथी सृष्टिनु सर्जन थयुं छे ते दर्शावतां प्रश्नोपनिषदमां कहुं छे के

“प्राणमांथी श्रद्धा, पंचमहाभूत (आकाश, वायु, तेज, जल अने पृथ्वी) इन्द्रियो मन, अन्न अने अन्नमांथी विर्य, तप, मंत्र, लोक अने लोकोमां नाम वगैरेनु सर्जन थयुं.” (6.4)

सृष्टिनां प्रारंभमां सौथी पहेलां प्राण उत्पन्न थतो होवाथी छांदोग्य उपनिषदमां तेने जयेष्ठ अने श्रेष्ठ कह्यो छे,

ज्येष्ठश्च श्रेष्ठश्च । (राजर्षि -2014)

अर्थात: “प्राणीओनां शरीरमां हुं जठराग्नि स्वरूपे रहुं छु. प्राण अने अपानने समानरूपे मेणवी हुं यार प्रकारनां (शुष्क, युस्य, काया अने रांधेलां) अन्नने पचावुं छुं.”

आ बधा एस प्राण वायुओ स्थूल अने सूक्ष्म शरीर वर्येनो संबंध जाणवी राभे छे.

अथर्ववेदनां प्राणसूक्तमां कहुं छे के प्राणे सर्व प्रतिष्ठितम् । (कांड 11, सूक्त 4) अर्थात “प्राणमां ज सधनुं प्रतिष्ठित थयेलुं छे.” मतलब के सृष्टिना सकल पदार्थोनु अस्तित्व प्राणने कारणे छे. प्राण सृष्टिना बीजरूप छे. ये ज रीते प्राण मात्रनो आधार पण प्राण छे. प्राण पछी बधा प्राणीओ जन्मे छे. अने जेवे छे. वणी सृष्टिनां यौद भुवनो

तथा तेमनां सयराचर स्थावर जंगम पदार्थो प्राणना आधारे ज टके छे. अने गतिशील रहे छे.

(राजर्षि - 2014)

“ज्यारे प्राण साधना उच्च स्तरनी बने छे त्यारे उत्पन्न थती गरमी भूब ज तीव्र बने छे. आ पछी ‘आज्ञायक’ ‘मूलाधार चकने’ संदेश आपे छे. मूलाधार अे कुंडलिनीनुं निवास स्थान छे. ज्यां कोस्मिक (ब्रह्मांड) प्राण सुषुप्त अवस्थांमं रहे छे सर्जनथी विनास सुधीना अनुभवो कुंडलिनीना स्तरोंमं दटायेला रहे छे तेथी ज तेने ‘आत्म शक्ति’ पण कहेवामं आवे छे. ‘आज्ञायक’ द्वारा प्रसारित संदेश आ शक्तिनी धक्को पहोंयाडे छे अने पछी महान जिवन शक्ति जागृत थाय छे. ज्यारे आ ऊर्जा तेनी संपूर्ण क्षमता साथे मुक्त थाय छे त्यारे ते सुषुमणा नाडी द्वारा यहे छे अने व्यक्तिनुं संपूर्ण परिवर्तन करे छे. ‘कोस्मिक’ प्राण अने ‘कुंडलिनी’ समानार्थी शब्दो छे. कुंडलिनी जागृत थवानो अर्थ छे. ‘कोस्मिक प्राण साथे अेक थवुं’ (निरंजनानंद/2012)

जागृत समये प्राण आ बे शक्तियो प्राण अने चित्त व्यक्तिनी अंदर संपूर्ण संतुलन प्राण करे छे. अने अेकबीजा साथे भली जाय छे. अने अेक बनी जाय छे. मननुं विघटन थाय छे अने तेनी साथे ऊर्जा उत्पन्न थाय छे. सत्य विस्फोटनं रुपमं देभाय छे. जेमांथी बधी वस्तुओनो उद्भव थतो जोवा मणे छे त्यारे सार्वत्रिक प्राणनो अभव थतो जोवा मणे छे. जेमने सार्वत्रिक प्राणनो अनुभव क्यो छे जेमने अेकतानो अेहसास थयो छे. तेओने संत अथवा मुक्त माणसो कहेवामं आवे छे, कारण के तेओअे पोतानी अंदर रहेली सूक्ष्म ब्रह्मांडनी अनंत वैश्विक ऊर्जाने नियंत्रित करीने द्वैतनी भावनाने नाबूद करी छे. आ स्तरे अंतिम योगनी अनुभूति थाय छे. ज्यां व्यक्ति सत्-चित्त आनंदनी प्राप्ति करे छे.

## निष्कर्ष

उपरोक्त विषयनुं निष्कर्ष कंठक आ प्रकारनुं छे.

- योग अे मानसिक - शारीरिक क्रिया छे जेनाथी मानवीनो आध्यात्मिक, शारिरिक अने बौद्धिक विकास थाय छे. योगनां घणा प्रकार छे. अेमां प्राणायाम मुख्य छे. ‘प्राणायाम’ द्वारा “प्राणवायुनो शरीरनां तमाम अंगोंमं पहोंयाडवो अने अेमां शक्तिनो संचार करवो.”
- आयुर्वेद मुजब प्राणयुक्त शरीरने जिवित कहेवाय छे. ‘आयु’ अने शरीरनो संबंध शाश्वत छे.
- स्वामी विवेकानंदना मते “जे कंठ गतीशील छे ते बधुं प्राण के वेगमं समायेलुं छे. (आ) सूर्य, चंद्र, ताराओने गति आपनार प्राण ज (छे). प्राण गुरुत्वाकर्षण छे. (राजयोग)”
- प्राण अे वैश्विक प्राण अर्थात् विश्वात्मा के परमात्मांमंथी उद्भववेली सर्जन शक्ति छे.
- शरीर, मन, आत्मा, परमात्मा, ब्रह्मांड आ बधां अेकबीजा साथे जोडायेला छे. आपणे आ बधा तत्वोंने अेकबीजाथी अलग करी शक्ता नथी. सूक्ष्म वर्तन अने सूक्ष्म विचारोंनी जटिल समस्याओनां उकेल माटे आपणे वैदिक विज्ञान द्वारा ‘प्राणतत्त्वने’ समजवुं पडे.

## संदर्भ सूचि

- [1] स्वामी राजर्षिमुनी, 2014, अष्टांगयोग दर्शिका भाग-4 लाईफ मिशन, बरोडा
- [2] योगाचार्य स्वामी कृपाल्वानंदज, 2016, ध्यान-विज्ञान कृपालुमुनि मंडण, मलाव
- [3] अथर्ववेद, प्राणसूक्त, कांड 11, सूक्त 8

- [4] तैत्तिरिय उपनिषद् भृगुवल्दी अनुवाद -3  
[5] योगाचार्य स्वामी कृपाल्वानंदज्, 2014 आसन अने मुद्रा (भाग-1) कृपालुमुनि मंडल, मलाव  
[6] छांदोग्य उपनिषद् (1:11:5)  
[7] कठोपनिषद् (2:3:2)  
[8] योगाचार्य स्वामी कृपाल्वानंद, 2010 हठयोगषटीयिका कृपालु मुनिमंडल, मलाव  
[9] शिव स्वरोदय (श्लोक – 219)  
[10] श्रीमद् भगवद्गीता, अध्याय-3 श्लोक-13, अ-15/14  
[11] स्वामी राजर्षिमुनि, 2014 अष्टांगयोग दर्शिका-4 लाईक मिशन, बरोडा  
[12] प्रश्नोपनिषद् (6.4)